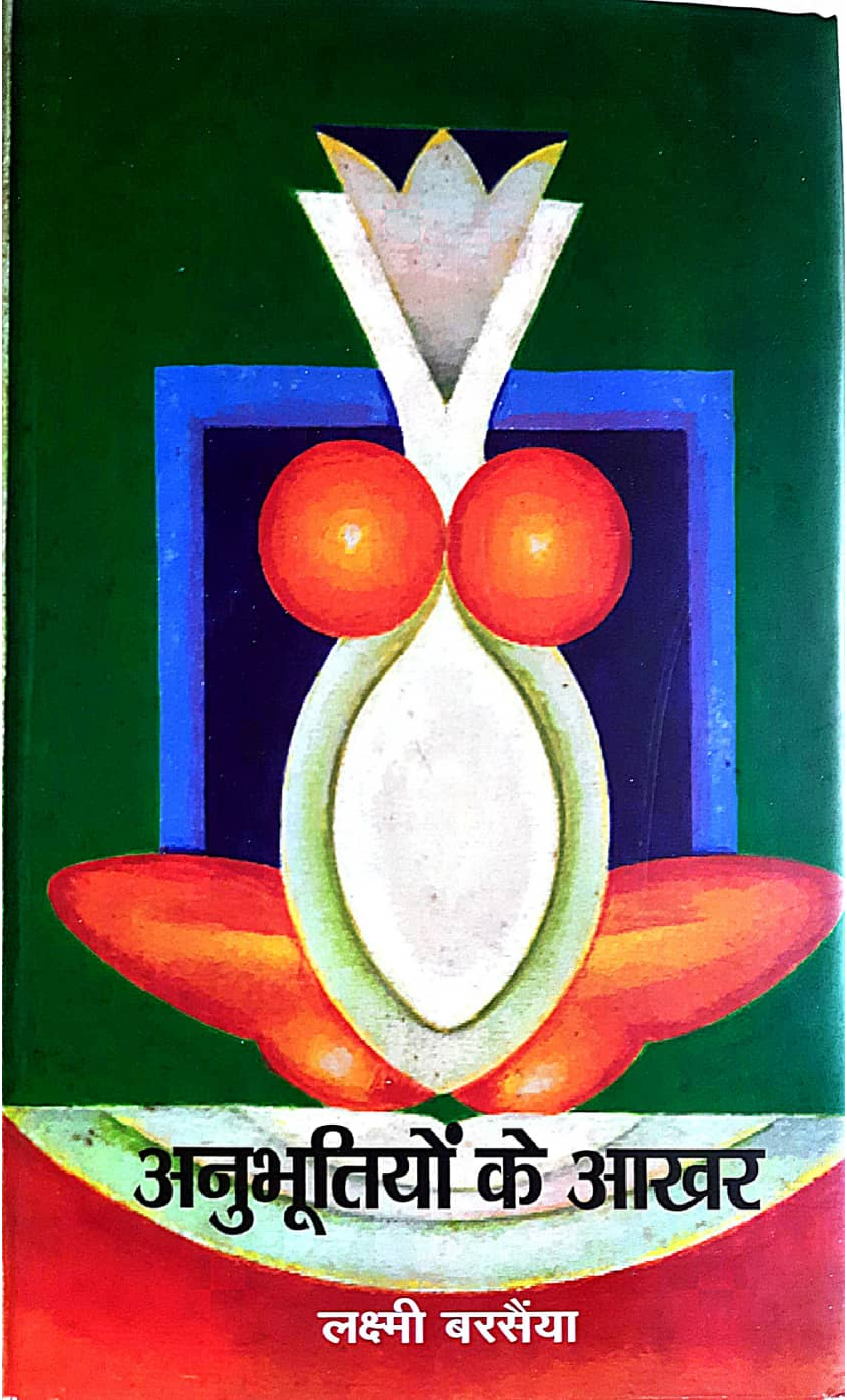

अनुभूतियों के आखर

लक्ष्मी बरसैंया

प्रौढ़ावस्था और लगभग वृद्धावस्था से कदम से कदम मिलाती श्रीमती बरसैंया जी अपने जीवन अनुभव, आने वाली पीढ़ी को सौंपना चाहती हैं। उनकी इसी जिजीविषा के फलस्वरूप 'अनुभूतियों के आखर' आपके समक्ष है। इसमें पारिवारिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्यिक आदि तमाम प्रकार के प्रसंग हैं। इनमें कोई क्रमबद्धता या विषयबद्धता नहीं है। जब जैसे भाव अथवा विचार उठे, उन्हें अंकित कर दिया गया।

उनका लेखन किसी साहित्यिक अनुशासन में बंधा हुआ नहीं है अपितु यह स्वप्रेरणा से हृदय में उत्पन्न भावों की अनौपचारिक अभिव्यक्ति है। एकदम सरल, सुबोध और सुगम्य विषय भी अपने आसपास के परिवेश से सम्बद्ध। इसलिए पढ़ते समय पाठकों का निजी जुड़ाव सा हो जाना स्वाभाविक है। उन्होंने अब तक जो देखा, सुना, जिया और पढ़ा तथा आये दिन घटनाओं को संचार माध्यम से देखा— ऐसी तमाम अनुभूत लहरों को इसमें बाँधने की चेष्टा की है, जिसमें सभी प्रकार के रंग और दृश्य हैं। जिन्हें पढ़कर पाठकों को लगेगा कि वह अपने जीवन की घटनाओं को ही देख पढ़ रहे हैं।

इसके पूर्व भी उनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिन्हें पर्याप्त सराहना मिली है। आशा है यह कृति भी पाठकों को प्रभावित व प्रेरित करेगी।

अनुभूतियों के आखर

श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया

अनामिका प्रकाशन
52 तुलारामबाग, प्रयागराज

पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, किसी भी माध्यम से प्रयोग नहीं किया जा सकता।

अनुभूतियों के आखर
© श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया

प्रकाशक

अनामिका प्रकाशन

52 तुलारामबाग, प्रयागराज-211006

फोन : 9415347186, 9264945248

e-mail : anamikabooks@gmail.com
vinodshukla185@gmail.com

मुद्रक
आर्मी प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ

टाईप सेटिंग एवं लेआउट
मानस कम्प्यूटर्स, प्रयागराज

मूल्य : रु0 450

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-90983-35-0

समर्पण

आदरणीया दीदी (सासू माँ)

जिनके कर्मठ और उदार स्नेहमय जीवन से

जीवन जीने की कला सीखी

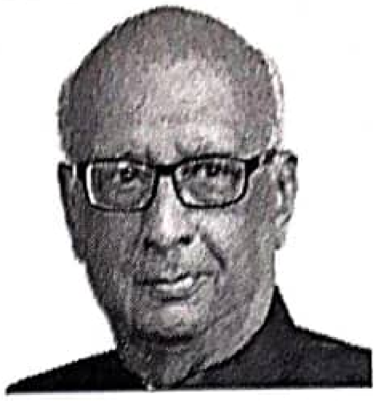

शुभाशीष

मेरी छोटी बहन श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया, जिसकी लेखनी अनेक अनुभवों से समृद्ध रही है, परन्तु वह इन्हें प्रकाशित कराने मैं संकोची भी रही है, फिर भी लेखन कार्य में उपलब्धि का श्रेय मेरी प्रेरणा को देती है। चूँकि बचपन में उसके हाथ की लकीरें देखकर मैंने बताया था कि उसकी पढ़ाई तो बहुत होगी, परन्तु रुक-रुककर होगी। पारिवारिक कठिनाइयों के नीचे ईश्वर की कृपा से ऐसा ही हुआ जैसे बहिन लक्ष्मी में सरस्वती आती गई हो।

मेरी चिर शुभकामनाएँ हैं कि लक्ष्मी की लेखनी ऐसा चमत्कार सदा दिखाती रहे। आशीष सहित-

बड़े भैया

गोविन्द

25/3/2022

आत्मभाव

मैं अपने भाव कहूँ या मेरे मनोभाव! मुझे कुछ ऐसी प्रेरणा मिली कि मैं पढ़ती भी हूँ, लिखती भी हूँ। माँ सरस्वती जी की कृपा मुझ पर देर से हुई। मैं उनसे विनती करती हूँ कि ऐसी ही वे कृपा बनाये रहें।

पतिदेव जी का पढ़ना-लिखना देखते-देखते मुझे भी लगा कि मैं भी कुछ लिखूँ। मैं अपने आप विषय सोचकर लिखने लगती हूँ। पहली 'दिव्य धाम दर्शन', दूसरी 'मेरी जीवन यात्रा', तीसरी 'भजन संग्रह' और अब चौथी 'अनुभूतियों के आखर'।

मैंने पिछली किताब में लिखा है—मैंने यादों के झरोखों में झाँका है बार-बार। अब कलम उठी है तो नहीं रोकूँगी इस बार....शायद मैं अपने इस वाक्य को साबित कर रही हूँ। मैं अपने शब्दों की माला पिरोकर सरस्वती जी को अर्पित कर रही हूँ।

मेरी यह किताब आप सभी के हाथों में आयेगी, सच मानिये तब उस समय मुझे अत्यन्त खुशी होगी। इन लेखों में, याद आये जीवन के पुराने पलों को संजोकर लिखने की चेष्टा की है। कुछ सोचने से, मनन करने से, मैं कुछ लिख पाई हूँ।

मेरे इस लेखन कार्य में हमारे पतिदेव डॉ. बरसैंया जी, तीनों दामाद जी, बेटियाँ एवं बेटे-बहू का मुझे भरपूर सहयोग मिला। सभी के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

—लक्ष्मी बरसैंया

कहाँ क्या

1 आत्मभाव 15
2 अनुभूतियों के आखर 16
3 देवी वन्दना 18
4 नदी की महिमा 20
5 मेरी प्यारी चिड़ियाँ 21
6 बादल की महानता 23
7 मौसमी रंग 24
8 बीते हुये लम्हे 26
9 लघु कथायें 27
10 नशा 29
11 वजन 30
12 मेरी काम वाली बाई 31
13 टी.वी. और मोबाईल का युग 32
14 जिन्दगी 34
15 बचपन 36
16 मेरी बुआ जी 37
17 रचना 38
18 पिता की सीख 40
19 माँ 42
20 मोह 44
21 बुढ़ापा 46
22 खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है 49

23 कलम 50
24 सेवाभावी-वैद्यराज जी 51
25 मेरे मामा गुलाब चन्द जी 54
26 आदर्श विवाह 56
27 बिन दूल्हे के बने बाराती 57
29 प्रेरणा 58
30 पूज्य मेरी माता जी 60
31 मेरी नानी जी 61
32 हमारी दीदी (सासू माँ) 62
33 कर भला तो हो भला 63
34 भोपाल निवास की सुनहरी यादें 65
35 जैसे को तैसा 68
36 अजनबी व्यक्ति का अनोखा प्यार 69
37 हम क्या जाने, हमारे रघुनाथ जी जाने 71
38 गाँव का ग्वाला 73
39 नर्मदा जी की पवित्र महिमा 75
40 "हमारे लड्डू गोपाल भगवान जी हमारे घर आये" 78
41 छतरपुर छोड़ने का कठिन निर्णय 82
42 होनहार लरका 86
43 बच्चों के मुख से 93
44 बालिकाओं का खेल 96

श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया

जन्मतिथि- 21 जून 1945 जबलपुर (म०प्र०)

शिक्षा- एम.ए. (समाजशास्त्र)

प्रकाशित पुस्तकें-

1. **दिव्य धरम दर्शन**- इसमें उत्तराखंड के चारों धामों के सचित्र चित्रण के साथ जगन्नाथपुरी, द्वारिका एवं रामेश्वरम्, गंगासागर, वैष्णव देवी तथा विवेकानन्द शिक्षा सहित देश के प्रमुख तीर्थ स्थलों का आँखों देखा वर्णन है।

2. **मेरी जीवन यात्रा**- इसमें जीवन के एवं परिवार के प्रमुख घटना-प्रसंगों का क्रमवार विवरण है।

3. **भजन संग्रह**- भजनों, लोकगीतों का संग्रह

4. **अनुभूति के आखर**- संस्मरण एवं अन्य

5. **लोकवाटिका** की सहलेखिका।

विशेष- कवितायें, कहानियाँ, लोकगीत, आलेख, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा आकाशवाणी से प्रसारित।

2. 'कामचोरी की सजा' शीर्षक कहानी म०प्र० पाठ्य-पुस्तक निगम की कक्षा-3 की सहायक वाचन में कई वर्षों तक पढ़ाई जाती रही।

3. धार्मिक और साहित्यिक प्रस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं का नियमित पठन-पाठन और लेखन।

4. समाज सेवा में गहन अभिरुचि।

लक्ष्मी बरसैंया

आवरण सज्जा
मानस क्रियेसंस

आलोचना

9789390683505

अ अनामिका प्रकाशन
1981 से 2022 साहित्य के 41 वर्ष